③ [–] + [6] = [6]

योग पूर्व पृष्ठ　　पृष्ठ 3 के अंक　　कुल अंक

प्रश्न (1) का उत्तर

छायावाद का प्रारंभ 1936 से माना जाता है। इसकी दो विशेषताएं निम्न लिखीत हैं:

(1) छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह हैं।

(2) वेदना एंव निराशा की भावना का चित्रण।

2

प्र० (3) का उत्तर:

जीवनी और आत्मकथा में दो अंतर:

(i) जीवनी किसी महापुरुष की किसी अन्य व्यक्ति द्वारा लिखी जाती हैं। जबकि आत्मकथा स्वयं के द्वारा लिखी जाती हैं।

(ii) जीवनी में लेखक स्वयं की क्रियाऐं एंव अपना ध्यान नहीं रखता जबकि आत्मकथा में लेखक अपनी समस्त क्रियाऐं रख देता हैं।

2

प्र० (4) का उत्तर:

छप्पय छंद के लक्षण:

(i) छप्पय छंद रोला एंव उल्लाला से मिलकर बनता हैं।

(ii) यह छः चरणों का संयुक्त छंद हैं।

2

प्र० (5) का उत्तर:

(अ) बहती गंगा में हाथ धोना।

अर्थ: किसी होते हुऐ कार्य में अपना काम निकालना।

प्रयोग: आज की भ्रष्ट नौकरशाही बहती गंगा में हाथ धोने जैसा काम करती हैं।

(ब) आग बबूला होना।

B S E M P

(4) | 6 | + | 8 | = | 14
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 4 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

अर्थ:- क्रोधित हो उठना।
प्रयोग:- जब घुसपैठीय भारत की सीमा में घुसते हैं तो भारतीय आग बबूला हो जाते हैं।

प्र० (7) उत्तर:-
दो ऐतिहासिक धारावाहिकों के नाम:-
(i) झाँसी की रानी।
(ii) टीपू सुल्तान

प्र० (9) उत्तर:-
रस की निष्पत्ति:-
~~रस की निष्पत्ति~~ निष्पत्ति विभाव, अनुभाव, संचारी भाव के संयोग से होती है।
इसमें तीन का मुख्य योगदान होता है:-
(i) विभाव (ii) अनुभाव (iii) संचारी भाव

प्र० (10) उत्तर:-
(अ) क्या उसने ताजमहल देखा ?
(ब) तुम ईश्वर में विश्वास नहीं करते।

प्र० (11) का उत्तर-
जब किसी देश में जनता के अधिसंख्यक भाग द्वारा कोई भाषा बोली जाती है तो उसे राष्ट्रभाषा कहते हैं। इसकी दो विशेषताएँ निम्न हैं:-

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

(5) | 14 | + | 7 | = | 21
योग पूर्व पृष्ठ | पृ... के अंक | कुल अंक

(i) राष्ट्र भाषा को संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त होती हैं।
(ii) यह भाषा सरकारी कार्यों में प्रयोग में लायी जाती हैं।

प्र०(12) का उत्तर :-

राष्ट्र एक राजनीतिक इकाई होती हैं अर्थात् राष्ट्र का आधार राजनीतिक होता हैं। भारत में विभिन्न जाति, धर्मों और भाषाओं को बोलने वाले लोग निवास करते हैं। और सभी अपने-अपने धर्म का आदर करते हैं। हमें चाहिए कि हम अपने धर्म, जाती का आदर करने के साथ-साथ अन्य धर्मों का आदर करें। जो व्यक्ति धर्म के नाम पर दंगे, फसाद, जैसे झगड़े करवाते हैं, वे धर्म के सच्चे अनुयायी नहीं कहें जा सकते। राष्ट्र के हित में ही सबका हित होता हैं, और राष्ट्र का अहित ही सबका अहित होता हैं। इसीलिए हम सबको मिलकर रहना चाहिऐ।

प्र० (13) का उत्तर :-
लेखक के शब्दों में, "सच्ची वीरता वहीं हैं जिसमें वीर व्यक्ति अपने आपको हर घड़ी, हर समय महान से भी महान बनाने का प्रयास करे।" जो व्यक्ति सच्चे वीर होते हैं उनमें सत्यता कूट-कूट कर भरी होती। वीर पुरुषों में चपलता का नामो निशान नहीं होता। वे तो शेर के समान होते हैं।

प्र०(14) का उत्तर

कहानी के प्रमुख तत्व :-
(i) कथावस्तु (ii) कथोपकथन या संवाद (iii) पात्र या चरित्र-चित्रण

6 | 21 + 6 = 27
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 6 के अंक | कुल अंक

(iv) अभिनेयता (v) भाषा शैली (vi) उद्देश्य

कहानी के उद्देश्य का महत्व :-

कहानी के उद्देश्य का महत्व यही माना गया है कि उसका उद्देश्य लोगों को 'सीख' देना होना चाहिए। जैसे-जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित कहानी - 'पुरस्कार'

प्र० (15) का उत्तर :-

भारतेन्दु युग के निबंधों की विशेषताऐं :-

(i) भारतेन्दु युग के निबंध ठोस एवं तर्क संगत होते हैं।

(ii) इस युग के निबंधों में कहानी एवं मुहावरों का भी प्रयोग है।

(iii) इस युग के निबंध विचार प्रधान होते हैं।

(iv) इतिहास, समाज, धर्म आदि पर व्यंग्य प्रधान निबंध लिखे गऐ।

दो निबंधकार :-

(i) 'भारेन्दु हरिश्चन्द्र'

(ii) 'बाबू गुलाब राय'

प्र० (17) का उत्तर :-

बाबू गुलाब राय के शब्दों में,

"निबंध वह गद्य रचना है जिसमें सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छंदता, सौष्ठव और आवश्यक संगति तथा

B S E M P

पृ के अंकों का योग

(7) 27 + 6 = 33
योग पूर्व पृष्ठ — पृष्ठ 7 के अंक — कुल अंक

संवेदधता के साथ किया गया हो।"

प्र० (18) का उत्तर:
सूखी डाली नामक एकांकी में हरिशंकर परसाई जी ने बरगद के पेड़ को एक प्रतीक के रूप में लिया हैं। जिस प्रकार बरगद के पेड़ की अनेक शाखाऐं और प्रशाखाऐं होती हैं उसी प्रकार दादाजी मूलराज सिंह के परिवार में उनके बेटे तथा पतोहू शाखाऐं हैं तथा नाती-पोते प्रशाखाऐं हैं। जिस प्रकार बरगद का पेड़ अपने घोंसलों की अनेक तूफानी हवाओं और वर्षा से रक्षा करता हैं ठीक उसी प्रकार दादाजी अपने परिवार की समस्त सुख-सुविधाओं का ध्यान रखते हैं तथा समस्याओं से बचाते हैं।

दादाजी जी की इस गौरवशाली महत्ता के कारण हम कह सकते हैं कि दादाजी की भूमिका एक बरगद के पेड़ के समान हैं।

प्रश्न (19) का उत्तर:
"तो मुझे भी प्राणदण्ड मिले" इस कथन के परिपेक्ष में हम 'पुरस्कार' कहानी के शीर्षक की सार्थकता निम्न प्रकार से व्यक्त कर सकते हैं:

जब मधूलिका की पुर्वों की जमीन राजा ने राज्य के नियमानुसार कृषि कार्य प्रारंभ करने के लिए लेली और मधूलिका को 'पुरस्कार' लेने को कहा।

जब मधूलिका को यह पता चला कि उसका प्रेमी उसके कौशल राज्य पर आक्रमण की तैयारी

कर रहा है, तब उसने देश प्रेम की खातिर राजा को यह सूचना दे दी और 'अरुण' को पहले ही बंदी बना लिया गया। मधूलिका को जब पुरस्कार लेने को कहा तो उसने कहा कि 'मुझे प्राणदण्ड मिले'। क्योंकि उसके प्रेमी को पहले ही फांसी दी जा चुकी है।

इस प्रकार पुरस्कार नामक शीर्षक कहानी में उचित है क्योंकि यह कहानी के ईर्द-गिर्द घूमता रहा है।

B S E M P

प्र० (2) का उत्तर:
'महाप्राण' विशेषण 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' के लिए प्रयोग किया जाता है।

प्र० (8) का उत्तर:
(अ) देश का भविष्य युवकों के हाथों में है।
(ब) भारत हमारा देश है।

प्र० (20) का उत्तर:
नई कविता की प्रमुख विशेषताऐं:
(i) नई कविता में कल्पना की अपेक्षा 'वास्तविकता' का वर्णन है।
(ii) नई कविता में 'आधुनिकता' का पुट है।
(iii) नई कविता में नए रूपकों, नए उपमानों, नवीन शैली का प्रयोग है।
(iv) नई कविता में भाषा सरल है एवं व्यंग्य कविताऐं

9 | 40 + 3 = 43

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 9 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

हैं।

तीनों कवि-

(i) धर्मवीर भारती
(ii) प्रभाकर मांचवे
(iii) दुष्यंत कुमार

प्र० (21) का उत्तर:

"सहयोग, श्रम और शांति" नामक कविता के माध्यम से कवि दिनकर जी समाज फैली हुई निम्नलिखित बुराईयो की ओर संकेत कर रहे हैं:-

(i) समाज में आज असमानता व्याप्त हो गयी है। कोई अमीर है तो कोई गरीब। लोग अपने सुख के लिए दूसरों का सुख छीन रहे हैं।

(ii) आज के धनवान लोग मौज-मस्ती से जीवन व्यतीत कर रहे हैं जबकि परिश्रम करने वाले लोगो को दो जून की भी रोटी प्राप्त नहीं होती।

(iii) दिनकर जीने कहा है जिस प्रकार ईश्वर ने बिना भेद-भाव के पृथ्वी पर सभी लोगों को समान रूप से सुख-सुविधाऐं जैसे-जल, वायु और प्रकाश प्रदान किया है तो इस संसार में फिर भेद-भाव क्यों।

(iv) आज भाग्यवाद के कारण लोग पाप से धन कमाते हैं। और अपने पापों को भाग्यवाद से ढकते हैं जबकि परिश्रमी पुरुष तथा ईमानदार आज इस संसार में पीछे हो गए हैं।

अतः दिनकर जीने हमारा ध्यान इन बुराईयो की

B S E M P

ओर आकर्षित करके भेद-भाव मिटाने की प्रेरणा दी हैं।

प्र० (22) का उत्तर:-

~~कवि~~ एक सखि अपनी सखि से कहती हैं कि हे सखि!
बसंत ऋतु का आगमन हो गया हैं। चारो ओर समस्त
वन प्रदेश में नया विकाश, हरियाली दिखाई दे रही हैं।
भौंरों का समूह भी चारण-भाट की तरह प्राकृति की सुन्दर
का यशोगान कर रहे हैं। कोयले भी अपने मधुर स्वर से
चारो ओर मीठा स्वर गुंजायमान कर रहीं हैं। लताओं ने
नवीन कोंपल रूपी वस्त्र पहन लिये हैं जिससे समस्त
वन-प्रदेश में यौवन की माया झलक रही हैं। लताऐं
अपने प्रिय वृक्ष से आलिंगन कर रही हैं और अपनी
कलियों का हार पहना रहीं हैं जिससे चारो ओर कुसुम
ही खुशबू फैली हुई हैं।

प्र० (16) का उत्तर:-

विस्मिल जी के शब्दों में,

"देश हित मरना पड़े,
मुझे सहस्त्रों बार भी
तो भी न मैं इस कष्ट को,
निज ध्यान में लाऊ कभी।

विस्मिल जी का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में अपूर्व
योगदान हैं। उन्होंने हिन्दु-मुस्लिम एकता स्थापित की।
वे काकोरी काण्ड के सिरमौर्य थे। उन्होंने देश की स्वतंत्रता

BSEMP

(11) [54] + [6] = [56]

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 11 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

के लिए एक बहुत बड़े क्रांतिकारी दल का गठन किया और उन्हे उस दल का नायक बनाया गया। उन्होंने हथियारों की आपूर्ती के लिए एक काकोरी नामक स्थान पर सरकारी खजाने को लूटकर हथियारों की आपूर्ती की

इस प्रकार बिस्मिलजी का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में अधिक योगदान है।

प्र० (24) का उत्तर -

मैथलीशरण गुप्त का काव्यगत परिचय -

(अ) दो रचनाऐं :

(i) 'साकेत' महाकाव्य

(ii) 'यशोधरा' खण्डकाव्य

(ब) भाव पक्ष :

मैथलीशरण गुप्त जी ने अपने काव्य में सरल और सरस भाषा के माध्यम से हिंदु-मुस्लिम एकता स्थापित की और राष्ट्रीय एकता, नारी उत्थान, दलित उत्थान, अछूतोद्धार का सहयोग किया।

(स) कला पक्ष :

कला पक्ष की कसौटी पर आपका काव्य कसा हुआ है। आपने अपने काव्य में सरल और शुद्ध भाषा का प्रयोग किया है। आपके छंदों में गेयता है। समस्त प्रकार के रस, छंद, अलंकारों का प्रयोग आपके काव्य में देखने को मिलता है। आपका काव्य भ्रमित मानवों को सतमार्ग दिखाता है।

प्र०(25) उ० उत्तर:

पदुमलाल पुन्नालाल जी का साहित्यिक परिचय -

(अ) दो रचनाऐं:-

(i) प्रदीप (ii) पंचपात्र

(ब) भाषा शैली:-

बख्शी जी की भाषा सरल, सरस एवं परिमार्जित है। आपने निबंधो मे हिन्दी भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी, उर्दु तथा ~~फारसी~~ फारसी शब्दो का भी प्रयोग किया है। संस्कृत के तत्सम और तत्भव ~~साथ~~ शब्दो के साथ-साथ मुहावरों और लोकोक्तियों का भी प्रयोग है। आपकी शैली कई प्रकार की है जिसमें प्रमुख है:- आत्म परख, आलोचनात्मक, हास्य व्यंगात्मक, चित्रात्मक और वर्णात्मक है।

(स) साहित्य मे स्थान:-

बख्शी जी ने अनमोल ग्रंथो की रचना करके हिन्दी साहित्य पर एक अमिट छाप छोड़ि है। आपने अपने निबंधो के माध्यम से युवा वर्ग को कल्पना के संसार से वास्तविक संसार में जाने की शिक्षा दी है।

प्र० (26) उ० ⇒

सन्दर्भ:-

प्रस्तुत गद्य अंश हमारि हिन्दी विशिष्ट साहि[त्य] भारती भाग-2 के अध्ययन हेतु निधारित "साम्प्रदायिक और राष्ट्रीयता" नामक शीर्षक से लिया गया है। इस

BSEMP

पृष्ठ के अंको का योग

लेखक "बाबू गुलाब राय" जी हैं।

प्रसंग :-

~~प्रस्तुत प्रस्तुत~~ प्रस्तुत गद्य अंश में लेखक ने सभी धर्मों का समान रूप से आदर करने की प्रेरणा दी है।

व्याख्या :-

~~का~~ लेखक कहता है कि भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र है। भारत में अनेक धर्मों तथा जातियों के लोग निवास करते हैं सभी धर्म अपने धर्म के अनुरूप जीवन यापन करते हैं। सभी व्यक्ति अपने धर्म का आचरण करने के लिए स्वतंत्र हैं भारत के धर्म निरपेक्ष राज्य है वह किसी के धर्म के बाधा नहीं लाता बल्कि वह एकता का संदेश देता है। इसलिए सभी सम्प्रदायों के लोगों को अपने-अपने धर्म का आदर और के साथ-साथ दूसरे धर्मों के प्रति आदर भावना रखनी चाहिए इसी में राष्ट्र का हित है। सभी धर्म एकता का संदेश देते हैं। वह अलगाव का संदेश नहीं देता इसलिए उसे अलगाव का साधन नहीं बनाना चाहिए। जो व्यक्ति धर्म को अलगाव बनाते हैं। वे धर्म के सच्चे अनुयायी नहीं हैं।

विशेष (1) भाषा सरल व ~~परिमार्जि~~ परिमार्जित है।

(2) शैली गंभीर है।

(3) मिलकर रहने की प्रेरणा दी गई है।

किसी कवि के शब्दों में,

"भरत माता का मंदिर ये, समता का संवाद यहाँ है।
हिन्दु-मुस्लिम, सिक्ख, इसाई, पावें सभी प्रसाद यहाँ है।"

P.T.O.

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग 4

(14) 63 + 4 = 67

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 14 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

B S E M P

प्र० (27) उ०→

सन्दर्भ :-

~~प्रस्तुत~~ प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक हिन्दी विशिष्ट से 'कामायनी' नामक महाकाव्य से उद्धृत आशा पर्व नामक शीर्षक से अवतरित हैं। इसके कवि ~~छायावाद~~ छायावाद के आधार स्तंभ जयशंकर प्रसाद जी हैं।

प्रसंग :-

प्रस्तुत काव्यांश मनु की ~~जिज्ञासा~~ ~~जिज्ञ~~ जिज्ञासा को बताया गया हैं।

व्याख्या :-

राजा मनु जब विशाल नीले आसमान की ओर देखते हैं तो उन्हे ऐसा लगता हैं कि यह महाप्रलय किसी की भौंहे टेढी होने से आया हैं। जिसके कारण प्रकृति सभी चिन्ह, सूर्य, पृथ्वी, चन्द्रमा आदि सब व्याकुल हो गये थे। लेकिन फिर भी प्रकृति के ये शक्ति चिन्ह असहाय, नगण्य हो गये थे।

विशेष :-

(i) नई शब्दावली का प्रयोग हैं।
(ii) रहस्य भावना। छायावाद हैं।
(iii) रूपक अलंकार, अंत्यानुप्रास अलंकार हैं।

पृष्ठ के अंकों का योग

प्र० (28) का उ०→

(अ) गद्यांश का शीर्षक,

"अहिंसा कर्मण्ता तथा परिश्रम"

P.T.O.

15

6	+	5	=	[illegible]
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 15 के अंक		कुल अंक

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

(ब) सारांश :

एक अच्छी दुनिया के निर्माण के लिए हमें युद्ध और हिंसा से लड़कर अहिंसा का मार्ग अपनाना होगा इसके लिए समाज में फैली हुई गरीबी, बेरोजगारी, असमानता, बीमारी को मिटाना होगा इस दिशा में हमारे देश की संस्थाओं और युवकों को योगदान देना होगा। सभी लोगों को मिलकर रहना होगा। तभी हमारा देश विश्व का सबसे अच्छा राष्ट्र होगा।

4

प्र० (29) का उत्तर

दिनाँक - 13/3/07

सेवा में,

श्रीमान जिला शिक्षा अधिकारी,

भोपाल (म०प्र०),

द्वारा, मा० शिक्षा मण्डल भोपाल म०प्र०,

विषय :-

शिक्षकों की पूर्ती करवाने हेतु।

महानुभाव,

सविनय निवेदन है कि हमारे स्कूल उत्कृष्ट उच्चतर शा० माध्यमिक विद्यालय पटेरा में शिक्षक सीमित मात्रा में हैं जबकि छात्रों की संख्या अधिक जिससे सभी विषय विधानानुसार नहीं हो पाते जिससे हमारी पढ़ाई में नुकसान होता है।

अतः श्री मान जी से सविनय निवेदन है कि हमारे विद्यालय में पर्याप्त शिक्षकों की व्यवस्था करवायी जाऐ जिससे हमारी पढ़ाई सुचारु रूप से चल सके।

BSEMP

पृष्ठ के अंको का योग

(16) [16] + [5] = [21]

योग पूर्व पृष्ठ   पृष्ठ 16 के अंक   कुल अंक

मध्यप्रदेश

सधन्यवाद सर

विनीत-

समस्त छात्र

दिनांक 13/03/07

प्र० (23) का उत्तर :-

कबीर दास जी ने अपनी कविताओं में सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके सामाजिक विकृतियों पर तीखा प्रहार किया है। कबीर दास जी का कहना है कि,

(i) हिन्दु-मुस्लिम धर्म ~~को~~ जैसे अन्य धर्म ईश्वर तक पहुँचने के रास्ते हैं जबकि भगवान एक। कबीर दास जी राम और रहीम में कोई अंतर नहीं मानते हैं।

(ii) कबीर दास जीने ~~हिन्दुओं~~ हिन्दुओं की मूर्ती पूजा, तीर्थ यात्रा तथा धार्मिक आडम्बरों की निंदा की। उनका कहना था कि,

"पाथर पूजें हरि मिलें, तो मैं पूजूं पहार,
याते यह चकिया भली, पीस खाऐ संसार।"

(iii) कबीर दास जीने मुसलमानों की हजयात्रा, मस्जिद में चढ़कर चिल्लाने की निंदा कीहै। वे कहते थे,

"कांकर, पाथर जोड़के मस्जत लई बनाये
ता चढ़ मुल्ला बांग दे क्या बहरा हुआ खुदाये।"

(iv) कबीर दास जी ने ईश्वर की सर्वव्यापकता निम्न उदाहरण से बतायी है - "कस्तूरी कुण्डल बसै, ~~मृ~~ मृग ढूँढे बन - माहीं

ऐसे घट-घट राम हैं, दुनिया जाने नाह।"
इस प्रकार कबीर दास जी ने अपनी कविताओं के माध्यम से समाज में फैली हुई कुरीतियों पर तीखा प्रहार किया है।

प्र० (6) उ०→
लोकगीत परिभाषा:-
लोकगीत ऐसे गीतों को कहते हैं जिसमें अपने क्षेत्र की बोली के माध्यम से अपने क्षेत्र के शब्दों के माध्यम से किसी गीत को गाया जाता है।
गीत
"आगे-आगे बाबुल पीछे-पीछे मायिल, चले हैं धियर कन्यादान हो राम,
मैया के हाथ गड़रुआ सोहे, तो बाबुल हैं कुस की डार हो राम,
हाथ गड़रुआ कंपन हैं लागो तो कंपी हैं कुस की डार हो राम।"

B S E M P

प्र० (3) का उत्तर:-
(अ) विज्ञान के बढ़ते चरण:-
"सावधान मनुष्य यदि विज्ञान है तलवार तो इसे दे फेंक तजकर मोह स्मृति के पार"
"आज विज्ञान का हमारे जीवन में उसी प्रकार महत्व है जिस प्रकार वायु, जल और प्रकाश का।"

पृष्ठ के अंकों का योग

"विज्ञान के बिना हम जी नहीं सकते।"

रूपरेखा–
प्रस्तावना–
विज्ञान के बढ़ते चरण–
(i) शिक्षा के क्षेत्र में,
(ii) कृषि के क्षेत्र में,
(iii) चिकित्सा के क्षेत्र में,
(iv) आवागमन के क्षेत्र में,
(v) खेलों के क्षेत्र में,
उपसंहार–

प्रस्तावना– आज विज्ञान का हमारे जीवन महत्व अत्याधि बढ़ गया है। जिस प्रकार हमारे जीवन में जल, प्रकाश तथा वायु का महत्व है उसी प्रकार विज्ञान का। आज के समय में विज्ञान के अभाव में हम मानव जीवन की कल्पना नही कर सकते। विज्ञान का प्रयोग मनुष्य सुबह उठने से रात में सोने तक करता है। आज विज्ञान का प्रयो रसोईघर से लेकर कारखानों तक में हो रहा है। विज्ञान के कारण ही आज का मनुष्य सफल बन सकता है। विज्ञान के प्रयोगों से ही हम पृथ्वी में छिपी हुई जीवनो पयोग वस्तुओं को बाहर निकालते है। इसीलिए ~~कहे~~ कहा है कि,

"विज्ञान है एक ऐसा अस्त्र जिससे कोई भी
समस्या समाप्त हो सकती है।"

विज्ञान के बढ़ते चरण→ आज विज्ञान के ~~चमत्क~~ चमत्कार

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

चमत्कार चारो ओर फैले हुये हैं। विज्ञान ने हमें अधिक से अधिक साधन दिये हैं जिससे हमारा जीवन अत्यंत सरल हो गया है। विज्ञान के आविष्कारों को हम निम्न प्रकार से परिभाषित कर सकते हैं:-

(1) शिक्षा के क्षेत्र में:-

विज्ञान का शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान है। कम्प्यूटर, टू-इन-वन टेप रिकार्डर जैसे आविष्कारों से आज की शिक्षा पद्धति अत्यंत सरल हो गयी है। कम्प्यूटर तथा टू-इन-वन टेप रिकार्डर आज की आवश्यकता बन गई है। अतः हम कह सकते हैं कि विज्ञान का शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है।

(2) कृषि के क्षेत्र में:-

विज्ञान का कृषि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है आज कृषि करना अत्याधिक सरल हो गयी है क्योंकि आज के समय की कृषि अधिक वैज्ञानिक है। प्राचीन काल में कृषि कार्य कठिन तथा लेकिन विज्ञान के आविष्कारों जिनमें ट्रेक्टर, थ्रेसर, हारवेस्टर, कल्टीवेटर आदि से कृषि कार्य अत्याधिक सरल हो गया है।

(3) चिकित्सा के क्षेत्र में

→ आज विज्ञान का महत्व चिकित्सा में भी बढ़ गया है। प्राचीन काल में जब दवाईयाँ नहीं होती थीं तो मानव मर जाता है। लेकिन आज के समय में कोई भी बीमारी क्यों न हो सभी का ~~इलाज~~ इलाज होने लगा है। बेबी टेस्ट ट्यूब, सर्जरी, जैसी आविष्कारों से मानव का जीवन अत्यंत सरल हो गया है।

BSEMP

(4) आवागमन के क्षेत्र में :-

आज विज्ञान के आविष्कारों के कारण आवागमन अत्याधिक सरल हो गया है। आज का मनुष्य अंतरिक्ष की यात्रा कर रहा है। चन्द्रमा पर रहने लगा है। हमें तो लगता है कि चन्द्रमा पर कृषि होगी। बस, रेल, वायुयान, अंतरिक्ष यान तथा जलयान आदि आविष्कारों से मनुष्य विश्व में और उसके साथ-साथ दूसरी दुनिया में भी जा सकता है।

B
S
E
M
P

(5) खेलों के क्षेत्र में,

आज विज्ञान के आविष्कारो से नये-नये खेलों की खोजें होने के कारण आज हर प्रकार के खेल खेले जा सकते हैं। पोलो, बैडमिंटन, टेबिल टेनिस, क्रिकेट इत्यादि।

(6) उपसंहार

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि आज का समय विज्ञान का समय है और विज्ञान के प्रयोगों से मानव का जीवन भी सरल हो गया है। विज्ञान के इतने अधिक विज्ञान के आविष्कार इतने अधिक हो गए हैं कि उनको भोगने के लिए संसार में मनुष्य नहीं है। विज्ञान के प्रयोग के अभाव में मानव जीवन अत्यंत कठिन है। विज्ञान ही एक ऐसा माध्यम है जिसने मानव जीवन अत्याधिक सरल बना दिया है। हमारे पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी कहते हैं कि,

P.T.O.

पृष्ठ के अंकों का योग

(21) 78 + 8 = 86

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 21 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

जय जवान, जय किसान और जय विज्ञान

8

BSEMP

के अंकों का योग